IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत विभाजन की त्रासदी के संदर्भ में राही मासूम रज़ा का आधा गाँव।

बलवान सिंह
राजकीय महाविद्यालय आरु एसु पुरा

मानव इतिहास में ऐसी अनेक घटनाएँ घटित होती रहती हैं जो कभी पुरानी नहीं पड़ती, बीत जाने पर भी जिनकी पुनरावृत्ति होती रहती है। उनसे उत्पन्न विषाद के जख्म कभी भरे नहीं जाते। भारत–विभाजन एक ऐसा ही स्थायी विषाद है। एक ऐसी त्रासदी है, जिसके घाव अभी तक पूरी तरह भर नहीं सके हैं, जो आज भी जनमानस के हृदय में नासूर बनकर टीसती रहती है। यह एक ऐसी घटना थी जिसने भविष्य की अनेक पीढ़ियों की जिंदगी को परिवर्तित कर दिया। मानव इतिहास में इतने बड़े स्तर पर आबादी की अदला–बदली कभी नहीं हुई थी। सदियों से लोग जिन गाँवों, शहरों और प्रदेशों में रहते आ रहे थे, वो एकाएक उनके लिए बेगाने हो गए थे। करोड़ों लोगों को इस विस्थापन के कारण अपना घर–परिवार छोड़कर दर–बदर होकर नारकीय जीवन जीने को अभिशप्त होना पड़ा था। विभाजन के कारण उपजी हिंसा से मची लूट–पाट और बलात्कार के कारण कम से कम प्रंदह लाख लोग अकारण ही मौत के घाट उतार दिए गये थे।

विभाजन की त्रासदी को व्यक्त करने में झूठा सच (वतन और देश) के फ्लैप पर लिखी यह टिप्पणी पूरी तरह सार्थक है– "भारत–पाकिस्तान विभाजन भारतीय राज्य के इतिहास का वह अध्याय है जो एक विराट त्रासदी के रूप में अनेक भारतीयों के मन पर आज भी जस–की–तस अंकित है। अपनी जमीनों–घरों से विस्थापित, असंख्य लोग जब नक्शे में खींच दी गई एक रेखा के इधर और उधर की यात्रा पर निकल पड़े थे। यह न सिर्फ मनुष्य के जीवट की बल्कि भारत वर्ष के उन शाश्वत मूल्यों की भी परीक्षा थी जिनके दम पर सदियों से हमारी हस्ती मिटती नहीं थी।"[1]

भारत विभाजन से उत्पन्न समस्याओं–साम्प्रदायिक जुनून, हत्या, बलात्कार, आगजनी, हिंसा, संपत्ति की लूटपाट, बलपूर्वक धर्मपरिवर्तन, भौगोलिक और आर्थिक विस्थापन, नैतिक मूल्यों का विघटन, संवेदनात्मक जड़ता, पागलपन और बर्बाद हुई जिंदगी पर हिन्दी में अनेक उपन्यास लिखे गए हैं। विभाजन पर लिखे गए महत्वपूर्ण उपन्यास इस प्रकार हैं– और इन्सान मर गया (रामानंद सागर), झूठा सच (यशपाल), आधा गाँव (डॉ० राही मासूम रज़ा) ओस की बूँद (डॉ० राही मासूम रज़ा), तमस (भीष्म साहनी),सती मैया का चौरा (भैरव प्रसाद गुप्त), जिन्दगीनामा (कृष्णा सोबती), वह फिर नहीं आई (भागवतीचरण वर्मा), लौटे हुए मुसाफिर (कमलेश्वर), वापसी (बदी उज्जमां), सूखा बरगद (मंजूर एहतेशाम), काले कोस (बलवंत सिंह), कितने पाकिस्तान (कमलेश्वर), वाह कैम्प (द्रोणवीर कोहली), गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान (कृष्णा सोबती)।

भारत विभाजन पर लिखे गए तमाम उपन्यासो में विभाजन के कारण उत्पन्न स्थितियों में घटित हत्याकांड, नृशंसता, बर्बरता, बलात्कार और विस्थापितों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया गया है। विभाजन से उत्पन्न साम्प्रदायिक दंगों के कारण व्यापक स्तर पर आबादी का विस्थापन एवं देशांतरण प्रारम्भ हुआ और विभाजन के बाद भी बहुत देर तक जारी रहा। विभाजन से पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अनेक मानवीय समस्याएँ उत्पन्न हुई।

विभाजन की त्रासदी पर लिखे गए उपन्यासो में आधा गाँव एक विशिष्ट स्थान रखता है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने उत्तर प्रदेश के जिला गाज़ीपुर के गाँव गंगौली के मुसलमानों के जीवन का यर्थाथ और बेपर्द चित्रण किया गया है। पाकिस्तान बनते समय मुसलमानों की विविध मनःस्थितियों, हिन्दुओं के साथ उनके सहज आत्मीय संबंधों तथा द्वन्द्वमूलक अनुभवों का अविस्मरणीय शब्दांकन किया गया है। आधा गाँव उपन्यास के महत्व को दर्शाते हुए डॉ० मेराज अहमद

लिखते हैं– "हिन्दी के चन्द चर्चित उपन्यासों में राही मासूम रज़ा कृत आधा गाँव का उल्लेख किया जाता है। साम्प्रदायिकता के प्रश्न की जैसी सांगो पाँग छान–बीन मुस्लिम समुदाय के सन्दर्भ में आधा गाँव के माध्यम से हुई दिखाई पड़ती है, कदाचित दूसरे उपन्यास में नहीं दिखती है।" [2]

गंगौली गाँव उपन्यास के केन्द्र में है। लेखक स्वयं मानते हैं कि यह कहानी न कुछ लोगों की है और न कुछ परिवारों की। उस यह गाँव की कहानी भी नहीं है जिसमें इस कहानी के भले–बुरे पात्र अपने को पूर्ण बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। लेखक कहानी को न धार्मिक मानते हैं और न ही राजनीतिक। उनके अनुसार यह समय की कहानी है और वो भी गंगौली से गुज़रने वाले समय की। आधा गाँव की कहानी कहते हुए लेखक की दृष्टि में साम्प्रदायिकता की अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण नहीं है। लेखक साम्प्रदायिकता से मुक्ति को अधिक महत्वपूर्ण मानता है और यही दृष्टिकोण प्रत्येक सम्प्रदाय, धर्म और राष्ट्र के लिए हितकारी है। सम्प्रदायिकता पर लेखक के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए डॉ० मेराज अहमद का यह कथन दृष्टव्य है– " यद्यपि साम्प्रदायिकता से संबंधित कथा साहित्य की परम्परा हिन्दी में बन चुकी है। इधर हाल के वर्षो में यह परम्परा धनीभूत भी हुई है। मुस्लिम समाज से आने वाले रचनाकारों ने मुस्लिम समाज के परिप्रेक्ष्य में इसे विशेष रूप से देखने का प्रयास भी किया है। इन प्रयासों के तहत मुस्लिम मानसिकता का पक्ष बड़े तल्ख तेवर के साथ उभरा है। तल्ख यूँ है कि उसमें भीरूता नहीं स्पष्टवादिता है। संतुलन का प्रयास नहीं, ईमानदारी है, जो भारतीय समाज की सबसे भयावह त्रासदी की तहों तक हमें ले जाती है। कहना अनुचित न होगा कि जिस गहराई से मुस्लिम मानसिकता और साम्प्रदायिकता की जाँच–पड़ताल आधा गाँव में हुई है वही गहराई लेखन के इतने समयान्तराल के बाद भी उपन्यास की प्रासंगिकता को न केवल बनाए हुए है अपितु उसे बढ़ा भी रही है।"[3] लेखक ने गंगौली गाँव में मोहर्रम ताज़ियादारी, जुलूस, नोहे, सोजखानी, मातम, मजलिसें, मिम्बर और चालीसवां इत्यादि के माध्यम से सैयदों, जुलाहों, राकियों, उत्तर पटटी और दक्खिन पटटी, छूतों और अछूतों तथा जमींदारों एवं आसामियों में बंटे समुदायों का विस्तारपूर्वक चित्रण किया है। आधा गाँव में विभाजन की स्थितियों के गंभीर एवं दूरगामी प्रभाव का चित्रण दिखाई पडता है। भारत विभाजन के कारण उत्पन्न साम्प्रदायिक विद्वेष से भड़की हिंसा ने बंगाल, बिहार और पंजाब में लोगों की जान लेना शुरू की तो गंगौली के सीधे–सादे लोग भी चिंतित होने लगे। हिन्दू–सिक्ख और मुसलमानों में मची मारकाट से उनको यह समझ नहीं आ रहा था कि पाकिस्तान बनने से लोग एक दूसरे के खून के प्यासे क्यों हो रहे हैं। देश के विभिन्न भागों में फैली हिंसा के कारण लोगों के मरने मारने के समाचारों से चिंतित होकर उपन्यास का एक महत्वपूर्ण पात्र फुन्नन मियाँ गाँव के ही एक गाँधीवादी नेता परसुराम से पूछता है–"एक ठो बात बता। सुन रहे की बंगाल, बिहार और पंजाब अऊर कानी कहाँ–कहाँ मार हिन्दू–मुसलमान में मार कटाई हो रही। तैं त गाँधी की पाटी का है। कऊनो दिन उनसे पूछ की ई सब का हो रहा और तोहरे वास्ते का हुकुम है उनका।"[4] उपरोक्त कथन में मानो गंगौली का सीधा–सादा किसान पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा की घोषणा करने वाले महात्मा गाँधी से प्रश्न कर रहा हो कि इस हिंसा का उत्तरदायित्व किस पर है। उसका प्रश्न मानो विभाजन के औचित्य पर ही सवाल खड़ा कर रहा है। विभाजन के दौरान गंगौली को भी अलगाववादी साम्प्रदायिकता की प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता सक्रिय हैं। वे गंगौली के लोगों से पाकिस्तान के पक्ष में वोट देने की अपील करते हैं। पाकिस्तान बनने को लेकर गंगौली वासियों में असमंजस है और पाकिस्तान को वोट देने और न देने के लिए उनके पास अपने–अपने र्तक हैं। जवाद मियाँ का लड़का कम्मो उनको वोट देने से मना करता हुआ कहता है–"ए साहब सुनिए, हमरी सीधी बात। अगर अलीगढ़ पाकिस्तान में जाय को होये त साफ–साफ बता दीजिए। काहे मारे की तब हमरे वालिद अऊर हमरी वालिदा ओट न दे सकते।"[5] मुस्लिम लीग वालों द्वारा गंगौली वासियों के मन में हिन्दुओं के प्रति अनेक प्रकार की शंकाएं पैदा करने का प्रयास किया जाता है। उनको अनेक प्रकार के डर दिखाए जाते हैं कि आज़ादी के बाद आठ करोड़ मुसलमानों को हिन्दू अछूत बना के रखेंगे। उनकी मस्जिदों को अपवित्र कर दिया जाएगा। मस्जिदों में हिन्दू अपनी गाय बाँधेंगे और तो और हिन्दू उनकी माँ बहनों को निकाल के ले जाएंगे। मुस्लिम लीग ने गंगौलीवासी मुसलमानों के मन में हिन्दुओं के प्रति घृणा के बीज बोने के अनेक प्रयास किए। लीग के कार्यकर्ता गंगौली के अमनपसंद मुसलमानों को उकसाने की कोशिश करते हुए कहते हैं कि पूरे देश में मुसलमानों के लिए जिन्दगी और मौत की लड़ाई छिड़ी हुई है। उनको वर्गलाया गया कि मुसलमानों की स्थिति दाल में नमक के बराबर है। एक बार अंग्रेज़ यहाँ से हटे नहीं कि हिन्दू उनको खा जाएंगे। इसलिए हिन्दूस्तानी मुसलमानों के लिए एक ऐसी जगह की जरूरत है जहाँ वे अमन से रह सकें।

साम्प्रदायिक वैमनस्य की आग लगाने की कोशिशें दोनों तरफ से जारी थीं। एक तरफ जहाँ मुसलमानों के मन में हिन्दुओं के प्रति नफरत और विद्वेष भरा जा रहा था तो दूसरी तरफ हिन्दूवादी ताकतें भी गंगौली के हिन्दूओं को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने का प्रयास कर रहीं थी। झिंगुरिया के लड़के छिकुरिया को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने के प्रयास किए जाते हैं कि इन मुसलमानों ने भारत वर्ष को तहस नहस कर दिया है। मंदिरों को तोड़–ताड़ कर इन पापियों ने मस्जिदें बनवा ली हैं। छिकुरिया को इन बातों पर कतई विश्वास न हुआ क्योंकि वह मियाँ लोगों को दशहरे का चंदा देते हुए देखता आया है। छिकुरिया को याद है कि मठ के बाबा को मियाँ लोगों ने पाँच बीघे ज़मीन की माफी दे दी है। साम्प्रदायिकता का ज़हर फैलाने वालों में बाबा किस्म के लोग और तथाकथित स्वामी वगरैह भी पीछे नहीं थे। उपन्यास में दर्शाया गया है कि बारिखपुर में एक स्वामी हिन्दूओं के मन में नफरत की आग को हवा देने का काम कर रहा था। भोले–भाले ग्रामीणों को भड़काने की चेष्टा में वह कुतर्को और झूठ का सहारा लेता है– "तब भगवान कृष्ण ने कहा, हे अर्जुन! हूँ और मेरे सिवाय कोई और नहीं है। आज वह मुरली मनोहर भारत के हर हिन्दू को पुकार रहा है कि उठो गंगा और यमुना के पवित्र तट से इन मलेच्छ, मुसलमानों को हटा दो.... धर्म संकट में है। गंगाजली उठाकर प्रतिज्ञा करो कि भारत की पवित्र भूमि को मुसलमानों के खून से धोना है ..... देखो कलकत्ता और लाहौर और नोआखाली में इन मलेच्छ तुर्को ने हमारी माताओं का कैसा अपमान किया है।"[6] उपन्यासकार ने उपन्यास 'आधा गाँव' में विभाजन के दौरान देशभर में भड़की हिंसा के कारणों को सामने लाने का प्रयास किया है। लेखक ने स्पष्ट किया है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों समुदाय में ऐसे लोग मौजूद थे जो आम जनता की लाशों पर रोटियाँ सेंककर अपनी–अपनी स्वार्थ की राजनीति को चमकाने की कोशिश में लगे हुए थे। स्वामी के बहकावे में आकर कुछ सिरफिरे हिन्दू मुसलमानों को मार डालने पर आमादा हो उठते हैं परन्तु ठाकुर जयपाल सिंह ने लाठियों के दम पर हमलावरों को भगाकर मुसलमानों की जान बचा ली। विभाजन के समय जबकि भारतवर्ष हिंसा, आगजनी, बलात्कार, हत्या आदि की आग में जल उठा था। तनाव, भय तथा आशंका का वातावरण गहरा हो चला था मगर गंगौली बिना किसी खून–खराबे के पाकिस्तान बनने के हादसे से गुजर जाता है। गंगौली तो विभाजन से उत्पन्न हिंसा से बच गया लेकिन पाकिस्तान बनने के नाम पर भड़की देशव्यापी साम्प्रदायिक हिंसा का वर्णन करते हुए उपन्यासकार लिखते हैं– "चारों तरफ इतने बड़े–बड़े शहर धायँ–धायँ जल रहे थे कि उस आग में बच्छन और सगीर फातमा एक तिनके की तरह पड़ीं और भक से उड़ गयीं। दिल्ली, लाहौर, अमृतसर, कलकता, ढाका, चटगाँव सैदपुर, रावलपिण्डी, लालकिला, जामा मस्जिद, गोल्डन टेम्पुल, जलियाँवाला बाग, हाल बाज़ार, उर्दू बाज़ार, अनारकली.... अनारकली का नाम सगीर फातमा था या रजनी कौर या नलिनी बनर्जी था– अनारकली की लाश खेत में थी, सड़क पर थी, मस्जिद और मन्दिर में थी और उसके नंगे बदन पर नाखूनों और दाँतों के निशान थे।"[7] साम्प्रदायिकता की इस घिनौनी तस्वीर ने मानवता को शर्मसार कर दिया। विभाजन के दंश की सबसे ज्यादा भुक्तभोगी महिलाएँ रहीं। लाखों महिलाओं का अपहरण कर उनसे बलात्कार कर के उनकी हत्या कर दी गई । जबरन शादी, धर्म परिवर्तन, गुलामी और जिंदगी भर के लिए टीस ये सब औरतों के साथ हुए जुल्म की बानगी भर है।

राही मासूम रज़ा ने आधा गाँव में विभाजन से उत्पन्न त्रासदायक स्थिति का गंगौली के मुसलमानों पर प्रभाव का सफल चित्रण किया है। जमींदारी की समाप्ति और विभाजन से गंगौली के मुसलमानों की हालत दिन–ब–दिन बिगड़ती गई। "दिन तो उसी तरह गुजर रहे थे जैसे गुजरा करते थे। वही गलियाँ, वही पट्टीदारियाँ... वही लम्स की सरसराहट, वही बेमानी मुसकराहटों की परछाइयाँ वही खेत....वही खलिहान..... मगर रातें तो अजीरन हो जाती थीं। ख्वाब देखने को जी चाहता कोई किसके सहारे ख़्वाब देखता! सक्कू क्या ख़्वाव देखती? मिग़दाद क्या ख़्वाब देखता? हकीम अली कबीर क्या ख्वाब देखते? फुन्न मियाँ क्या ख़्वाब देखते? जिन्नातों वाली मस्सिद या शमशान तक अकेले जाना मुमकिन है, लेकिन ख़्वाबों की टेढ़ी–मेढ़ी पगडण्डियों पर कोई अकेला नहीं जा सकता और आलम यह था कि अपने रगो का खून पाकिस्तान में मारा–मारा फिर रहा था और जिस ताल्लुक और बाहमी रिफाकत और दोस्ती पर मुआशरे की बुनियाद थी वह ताल्लुक टूट रहा था, वह रिफ़ाक़त खत्म हो रही थी और एतमाद की जगह दिलों में एक खौफ़ और एक गहरा शक परवरिश पा रहा था" [8] जमींदारी टूटने से वे तंगहाली और मानसिक क्लेश से जर्जर होने लगे। पाकिस्तान बन जाने से इन लोगों की हर चीज़ बंट और बिखर गई। पाकिस्तान बनने से सिर्फ हिन्दू–मुसलमान को ही एक दूसरे से अलग नहीं किया बल्कि मियाँ–बीवी, भाई–बहन, बाप–बेटे को भी अलग–अलग कर दिया था। गंगौली वालों की खुशियों को तो जैसे ग्रहण लग गया था। गाँव में जैसे मातम सा पसरा रहता। जिंदगी की रौनक और गहमा–गहमी से गमकने वाला गंगौली उदास और तन्हा हो चुका था। पाकिस्तान बन जाने से सब कुछ बिखर गया था। आधा गाँव के एक प्रमुख पात्र हकीम साहब का दर्द कुछ इस प्रकार छलक उठता है– "नाहीं बेटा हम बहुत खुश हैं। एक ठो बेटा रहा .... ओ पाकिस्तान चला गया। एक ठो जमींदारी रही, ओहू

को समझो कि पाकिस्तान चली गयी। अरे, जो चीज हमरे पास न है, ओ पाकिस्तान न गयी? हमरे पास रह का गया है? एक ठो बेवा बेटी, तीन ठो यतीम नवासे–नवासी, एक ठो बहू ओहो बेवया ही है। तीन ठो पोते–पोती, ओहू को यतीम समझो।.... हमरी समझ में तो भाई कुछ आता न। नौ पराणी का पेट कैसे चलाये।"[9] हकीम साहब के माध्यम से उपन्यासकार ने उन तमाम लोगों की व्यथा को प्रकट कर दिया है जिनके अपने पाकिस्तान चले गए थे और फिर कभी वापस नहीं लौटे। विभाजन के बाद गंगौली की स्थिति बड़ी त्रासद हो उठी थी। जवान लड़कियों की शादी में परेशानियाँ आने लगीं। सईदों के प्रत्येक घर में चार चार–पाँच शादी योग्य लड़कियाँ थी परन्तु लड़कों का तो जैसे अकाल पड़ गया हो। अधिकतर लड़के तो ब्रितानी फौज की लड़ाई में मारे गए थे। बचे खुचे लड़के अच्छे अवसर की तलाश में पाकिस्तान चले गए थे। महँगाई आसमान छूने लगी थी। घर के छोटे–छोटे खर्चे चलाने के लिए औरतें अपने जेबर बेचने को मजबूर थी। सईदजादे खत्म होने के बाद बची–खुची जमीन बेचने के लिए विवश थे। हालात इतने बदतर हो जाते हैं कि लड़कियाँ सिर्फ कपड़ों के दाम पूछ सकती थीं, खरीदना अब उनके वश की बात नहीं रह गई थी। गंगौली के जिंदादिल लोगों के चेहरों पर अब सिर्फ मुर्दनी और उदासी छाई रहती। नगंगौली में रहते हुए भी वे अजनबी और अकेले हो गए हैं.... उत्तर और दखिन पटटी में हर फर्द यकलखत अकेला हो गया। बुढ़ापा, जवानी और बचपन, सुहाग और बेवगी, दोस्ती दुश्मनी और पट्टीदारी। हर कैफियत अकेली थी। हर जज़्वा तन्हा था। दिन से रात और रात से दिन का ताल्लुक टूट गया था।"[10] उपर्युक्त कथन विभाजन के बाद उत्पन्न स्थितियों को पूरी शिद्दत से बयां करता है। गंगौली पर विभाजन के त्रासद प्रभाव को लेखक ने पूरी ईमानदारी के साथ अभिव्यक्त किया है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि डॉ० राही मासूम रज़ा ने आधा गाँव के माध्यम से पाकिस्तान बनने की प्रक्रिया में गंगौली के मुसलमानों की मनोस्थिति और द्वन्द्व का बखूबी चित्रण किया है। लेखक ने साम्प्रदायिक हिंसा के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का वर्णन करने के साथ–साथ गंगौली वासियों के आपसी भाईचारे, सादगी और अपने गाँव के प्रति उनके प्रेम को दर्शाया है। विभाजन के विनाशकारी प्रभाव को भी लेखक ने आधा गाँव में स्थान दिया है।

आधार ग्रंथ–सूची

1. यशपाल– झूठा सच (वतन और देश)– पृष्ठ–फलैप पर से –लोक भारती पेपर बैक्स–2016

2.डॉ० मेराज अहमद–आधा गाँव में विभाजन की त्रासदी और राष्ट्रीय एकता के संदर्भ–वाड०मय हिन्दी पत्रिका, अलीगढ़–मार्च, 2008

3.डॉ० मेराज अहमद–आधा गाँव में विभाजन की त्रासदी और राष्ट्रीय एकता के संदर्भ–वाड०मय हिन्दी पत्रिका, अलीगढ़–मार्च, 2008

4.डॉ०राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–282–राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली– 2003

5.डॉ०राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–250–राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली–2003

6.डॉ० राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–286– राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली– 2003

7.डॉ० राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–295–राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली–2003

8.डॉ० राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–338–राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली–2003

9.डॉ० राही मासूम रज़ा– आधा गाँव–पृष्ठ संख्या–306–राजकमल पेपर बैक्स, नई दिल्ली–2003

सहायक ग्रंथ सूची

1.डॉ० राही मासूम रज़ा– आधा गाँव– राजकमल पेपर बैक्स,नई दिल्ली–2003

2.यशपाल–झूठा सच (वतन और देश)– लोक भारती पेपर बैक्स–2016

3.सुभाषचंद्र यादव–भारत–विभाजन और हिन्दी उपन्यास– बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद, पटना–2001.